नवभारत
संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी

व्यक्तिगत स्वतंत्रता का नया अध्याय

सर्वोच्च न्यायालय का हालिया निर्णय,जिसमें हर गिरफ्तारी का कारण लिखित रूप से देना अनिवार्य ठहराया गया है दरअसल,भारतीय लोकतंत्र में व्यक्तिगत स्वतंत्रता की रक्षा को नई ऊंचाई देता है. 'मिहिर राजेश शाह बनाम महाराष्ट्र राज्य' मामले से उपजा यह फैसला केवल एक चर्चित दुर्घटना से जुड़ा न्यायिक हस्तक्षेप नहीं, बल्कि पूरे आपराधिक न्याय तंत्र की संरचना को अधिक पारदर्शी, अधिक जवाबदेह और अधिक मानवीय बनाने वाला ऐतिहासिक कदम है.

भारतीय संविधान का अनुच्छेद 22(1) लंबे समय से यह सुनिश्चित करता आया है कि किसी भी नागरिक को उसकी गिरफ्तारी के कारणों से अवगत कराया जाए. लेकिन व्यवहारिक दुनिया में यह अधिकार अक्सर मौखिक जानकारी, अस्पष्ट शब्दों और पुलिस की सुविधानुसार की गई व्याख्याओं के बीच खो जाता था. अदालत ने इस बुनियादी अधिकार को व्यावहारिक धरातल पर मजबूत करने का जो निर्णय लिया है, उससे स्पष्ट संदेश जाता है कि मौलिक अधिकार केवल सिद्धांत नहीं, बल्कि अमल में उतारी जाने वाली संकल्पना हैं. न्यायालय ने कहा है कि गिरफ्तारी चाहे किसी भी कानून के तहत हो,चाहे दंड संहिता हो या नया भारतीय न्यायिक संहिता 2023, गिरफ्तार व्यक्ति को गिरफ्तारी का आधार लिखित रूप में दिया ही जाना चाहिए. यह जानकारी उस भाषा में होनी चाहिए जिसे आरोपी समझ सके. अदालत ने गिरफ्तारी के क्षण को आदर्श माना है, और यदि किसी कारणवश वह संभव न हो, तो कम से कम मजिस्ट्रेट के सामने पेश करने से दो घंटे पहले यह लिखित कारण उपलब्ध कराना अनिवार्य होगा. इस आदेश की असली शक्ति उसके परिणामों में निहित है. यदि पुलिस अधिकारी इन दिशानिर्देशों का पालन नहीं करते, तो गिरफ्तारी और उसके बाद की रिमांड अवैध मानी जाएगी.

न्यायालय ने स्पष्ट किया है कि ऐसी स्थिति में आरोपी को रिहा करने की स्वतंत्रता होगी. यह प्रावधान पुलिस और जांच एजेंसियों पर वास्तविक अंकुश के रूप में कार्य करेगा और उन्हें गिरफ्तारी के निर्णय में अधिक सावधानी और विवेक अपनाने के लिए बाध्य करेगा. यह फैसला बताता है कि राज्य की शक्ति लोगों की स्वतंत्रता को कुचलने का हथियार नहीं बन सकती.यह भी महत्वपूर्ण है कि अदालत ने गिरफ्तारी के लिखित कारण देने को केवल तकनीकी औपचारिकता नहीं माना, बल्कि एक ऐसा साधन बताया है जो आरोपी को तुरंत कानूनी सहायता लेने में सक्षम बनाता है. जब गिरफ्तारी का आधार स्पष्ट होगा, तब न्याय प्रक्रिया में देरी कम होगी, बेवजह की हिरासतें घटेंगी, और व्यक्ति को अपनी रक्षा करने का अवसर समय पर मिलेगा.

कुल मिलाकर यह फैसला उस संवैधानिक भावना को पुनः स्थापित करता है जिसमें स्वतंत्रता को सर्वोच्च मूल्य माना गया है. एक ऐसी व्यवस्था में, जहां अक्सर शक्तियां असंतुलित हो जाती हैं, सर्वोच्च न्यायालय का यह हस्तक्षेप नागरिकों को यह भरोसा दिलाता है कि न्यायपालिका संवैधानिक अधिकारों की प्रहरी है. यह फैसला न केवल पुलिस कार्यप्रणाली में सुधार लाएगा, बल्कि उस व्यापक लोकतांत्रिक विश्वास को भी मजबूत करेगा कि राज्य का हर कदम कानून और विवेक की सीमाओं के भीतर रहकर ही उठाया जाना चाहिए. बहरहाल,व्यक्तिगत स्वतंत्रता की रक्षा की दिशा में यह निर्णय भारतीय न्याय व्यवस्था के लिए सचमुच एक नया अध्याय है पूरी तरह से स्वागत योग्य, आवश्यक और भविष्य को दिशा देने वाला है.

वंदे मातरम्- सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की प्रथम उद्घोषणा

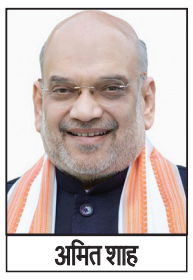
अमित शाह

> आज जब हम भारत पर्व मना रहे हैं और सरदार पटेल की जयंती पर उन्हें श्रद्धापूर्वक स्मरण कर रहे हैं, तो यह भी याद करते हैं कि कैसे सरदार साहब ने 'एक भारत' का निर्माण कर 'वंदे मातरम की भावना को ही मूर्त रूप दिया था. यह गीत केवल अतीत का स्मरण मात्र नहीं, बल्कि भविष्य के लिए एक आह्वान भी है. 'वंदे मातरम' आज भी विकसित भारत 2047 के हमारे संकल्प में प्रेरणा दे रहा है. यह भारत के सभ्यतागत आत्मविश्वास का प्रतीक है. अब, इस भावना को आत्मनिर्भर और श्रेष्ठ भारत में परिवर्तित करना हमारी जम्मिदारी है. 'वंदे मातरम स्वतंत्रता का गीत है, अटूट संकल्प की भावना है, और भारत के जागरण का प्रथम मंत्र है. राष्ट्र की आत्मा से जन्मे शब्द कभी समाप्त नहीं होते — वे सदैव जीवित रहते हैं, पीढ़ियों तक गूंजते रहते हैं. यह जयघोष युगों और पीढ़ियों में अनंतकाल तक प्रतिध्वनित होता रहेगा. समय आ गया है कि हम अपने इतिहास, अपनी संस्कृति, अपनी मान्यताओं और अपनी परंपराओं को भारतीयता की दृष्टि से देखें.

हमारे देश के इतिहास में ऐसे कई अहम पड़ाव आए, जब गीतों, कलाओं ने अलग-अलग रूपों में लोक भावनाओं को सहेजकर आंदोलन को आकार देने में अहम भूमिका निभाई. चाहे छत्रपति शिवाजी महाराज जी की सेना के युद्धगीत हों, आजाद के आंदोलन में सेनानियों के गान या आपातकाल के विरुद्ध युवाओं के सामूहिक गीत, गीतों ने भारतीय समाज को स्वाभिमान की प्रेरणा भी दी और एकजुट भी बनाया.

ऐसा ही है भारत का राष्ट्रीय गीत 'वंदे मातरम, जिसका इतिहास किसी युद्धभूमि से नहीं, बल्कि एक विद्वान बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय जी के शांत लेकिन अडिग संकल्प से शुरू होता है. सन् 1875 में, जगद्धात्री पूजा (कार्तिक शुक्ल नवमी या अक्षय नवमी) के दिन, उन्होंने उस स्तोत्र की रचना की जो भारत की स्वतंत्रता का शाश्वत गीत बन गया. इन पवित्र शब्दों को लिखते हुए, वे भारत की गहनतम सभ्यतागत जड़ों से प्रेरणा ले रहे थे. अथर्ववेद के उद्घोष माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्या- से लेकर देवी महात्म्य में विश्वमाता के आह्वान से प्रेरणा ले रहे थे.

बंकिम बाबू का यह मंत्र, प्रार्थना भी था और भविष्यवाणी भी. 'वन्दे मातरम्' केवल भारत का राष्ट्रीय गीत ही नहीं, सिर्फ स्वतंत्रता आन्दोलन का प्राण ही नहीं बल्कि यह बंकिमचन्द्र चटोपाध्याय जी द्वारा 'सांस्कृतिक राष्ट्रवाद' की प्रथम उद्घोषणा है. इसने हमें याद दिलाया कि भारत केवल जमीन का एक टुकड़ा नहीं, बल्कि एक भू-सांस्कृतिक राष्ट्र है - जिसकी एकता उसकी संस्कृति और सभ्यता से आती है. यह केवल भू-भाग नहीं है, बल्कि तीर्थ है, स्मृति, त्याग, शौर्य और मातृत्व से बंधी पवित्र भूमि है.

जैसा कि महर्षि अरविंद ने वर्णन किया, बंकिम आधुनिक भारत के एक ऋषि थे, जिन्होंने अपने शब्दों के माध्यम से राष्ट्र की आत्मा को पुनर्जीवित किया. उनका 'आनंदमठ' केवल एक उपन्यास नहीं, बल्कि गद्य में एक मंत्र था, जिसने एक ऐसे राष्ट्र को जागृत किया जो अपनी दिव्य शक्ति को भूल चुका था. अपने एक पत्र में, बंकिम बाबू ने लिखा-मुझे कोई आपत्ति नहीं है यदि मेरे सभी कार्य गंगा में बहा दिए जाएँ. यह श्लोक ही अनंत काल तक जीवित रहेगा. यह एक महान गान होगा और लोगों के हृदय को जीत लेगा. ये शब्द भविष्यसूचक थे. औपनिवेशिक भारत के सबसे अंधकारमय काल में लिखा गया, 'वंदे मातरम जागृति का प्रभात-गीत बन गया, एक ऐसा भजन जिसने 'सांस्कृतिक राष्ट्रवाद' को सभ्यतागत गौरव के साथ जोड़ दिया. ऐसी पंक्तियाँ केवल वही व्यक्ति लिख सकता था जिसके रोम-रोम में राष्ट्र के प्रति भक्तिभाव कूट-कूट कर भरा हो.

1896 में, रवींद्रनाथ टैगोर जी ने 'वंदे मातरम को धुन में पिरोया और कोलकाता कांग्रेस अधिवेशन में इसे गाया, जिससे इसे वाणी और अमरता प्राप्त हुई. यह गीत भाषा और क्षेत्र की सीमाओं से आगे बढ़कर पूरे देश में गूंज उठा. तमिलनाडु में सुब्रमण्यम भारती जी ने इसका तमिल अनुवाद किया, और पंजाब में क्रांतिकारियों ने इसे गाते हुए ब्रिटिश राज को खुली चुनौती दी.

1905 में, बंग-भंग आंदोलन के दौरान, बंगाल में विद्रोह भड़क उठा. अंग्रेजों ने 'वंदे मातरम' के सार्वजनिक पाठ पर प्रतिबंध लगा दिया था, फिर भी, 14 अप्रैल, 1906 को बारीसाल में, हजारों लोगों ने इस आदेश की अवहेलना की. जब पुलिस ने शांतिपूर्ण सभा पर लाठीचार्ज किया, तो पुरुष और महिलाएँ सड़कों पर 'वंदे मातरम का नारा लगाते हुए लहूलुहान हो गए.

वहाँ से, 'वंदे मातरम का मंत्र, गदर पार्टी के क्रांतिकारियों के साथ कैलिफ़ोर्निया पहुँच गया, आजाद हिंद फ़ौज में गूँजा, जब नेताजी के सैनिक सिंगापुर से मार्च कर रहे थे और 1946 के रॉयल इंडियन नेवी की क्रांति में भी गूँजा, जब भारतीय नाविकों ने ब्रिटिश युद्धपोतों पर तिरंगा फहराया. खुदीराम बोस से लेकर अशफाकउल्ला खान तक, चंद्रशेखर आजाद से लेकर तिरुपुर कुमारन तक, नारा एक ही था. यह अब सिर्फ एक गीत नहीं रहा; यह भारत की सामूहिक आत्मा की आवाज़ बन गया था. महात्मा गांधी ने स्वयं स्वीकार किया था, 'वंदे मातरम में सबसे सुस्त रक्त को भी जगाने की जादुई शक्ति थी.

-लेखक केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री हैं.

वैश्विक भूख मिटाने के लिए भारत रोल मॉडल

देश के 80 करोड़ से ज्यादा लोगों को मुफ्त अनाज देने वाला भारत भूख की समस्या से निपटने के लिए पूरी दुनिया के लिए रोल मॉडल है. यह विचार 'शेयर योर स्ट्रेंग्थ' के सहसंस्थापक बिली शोर ने व्यक्त करते हुए कहा कि अमेरिका की ट्रंप सरकार ने 'स्नैप' कार्यक्रम बंद कर जरूरतमंद लोगों को मुफ्त में अनाज, किराना, दूध व जरूरी वस्तुएं देना बंद कर दिया. पहले ऐसे लाखों लोगों को फूड स्टैम्प दिए जाते थे और उनके क्रेडिट कार्ड में इसके लिए रकम डाली जाती थी. भारत में स्थानीय प्रतिभा तथा नवोन्मेष ने भूख की चुनौती से निपटने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है. भारत के दानशील प्रवृत्ति के लोगों ने अनेक स्टार्टअप शुरू किए हैं जिसमें लाखों बच्चों को प्रतिदिन निशुल्क खाना मिलता है. भारत में मध्यमवर्ग की बढ़ती आय भी अन्य देशों के लिए अनुसंधान का विषय है. स्वयं बिल गेट्स ने एक बार कहा था कि विश्व के सामने कुपोषण बहुत बड़ी चुनौती है. जहां तक इससे निपटने की बात है, भारत को इस संबंध में वैश्विक नेता मानना पड़ेगा. बिली शोर के मुताबिक युद्ध का हमेशा भूख से संबंध नहीं होता. अमेरिका में कोई युद्ध नहीं है, अकाल भी नहीं पड़ रहा है, लेकिन फिर भी भूख की समस्या है. गाजा में भूख का संकट मानव निर्मित है. भूख को

विश्व के हर देश को ऐसे संगठनों से सीख लेनी चाहिए. आज दुनिया के देश परस्पर आ गए हैं. वह एक-दूसरे के अनुभव से काफी लाभ उठा सकते हैं. गरीबी, साधनहीनता, शिक्षा व अवसरों की कमी की वजह से भी भूख की समस्या बढ़ती है. मानवीयता इसी में है कि किसी को भी भूखा न रहने दिया जाए.

हथियार बनाना युद्ध अपराध है. अमेरिका स्नैप प्रोग्राम बंद करके यही कर रहा है. अफ्रीका और हैती में लोग भूख से मर रहे हैं. भारत में अक्षयपात्र और अन्नपूर्णा जैसे संगठन स्कूली छात्रों को भोजन दे रहे हैं. विश्व के हर देश को ऐसे संगठनों से सीख लेनी चाहिए. आज दुनिया के देश परस्पर आ गए हैं. वह एक-दूसरे के अनुभव से काफी लाभ उठा सकते हैं. गरीबी, साधनहीनता, शिक्षा व अवसरों की कमी की वजह से भी भूख की समस्या बढ़ती है. मानवीयता इसी में है कि किसी को भी भूखा न रहने दिया जाए.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

पिच से लेकर मैट तक

खेल सशक्तिकरण के एक नए युग की पटकथा लिख रही हैं महिलाएं

जब पूरा देश भारतीय महिला क्रिकेट टीम की ऐतिहासिक वर्ल्ड कप जीत का जश्न मना रहा है, उसी समय एक और खेल चर्चा में आने को तैयार है- महिला कुश्ती. की इस बड़ी जीत से कुछ दिन पहले ही, प्रो रेसलिंग लीग की वापसी की आधिकारिक घोषणा नई दिल्ली में एक शानदार प्रेस कॉन्फ्रेंस में की गई. यह लीग जनवरी 2026 से शुरू होगी. इन दोनों उपलब्धियों ने मिलकर भारतीय खेलों में एक नया दौर शुरू किया है, जहाँ महिला खिलाड़ी अब हर मैदान पर देश की शान बढ़ा रही हैं और सफलता की नई कहानियाँ लिख रही हैं.

प्रो रेसलिंग लीग 2026: एक नई शुरुआत फिर से शुरू हो रही प्रो रेसलिंग लीग एक बार फिर कुश्ती को चर्चा के केंद्र में लाने जा रही है. यह लीग अब और भी आधुनिक, पेशेवर और महिला-पुरुष दोनों खिलाड़ियों के लिए समान अवसरों वाली होगी. भारतीय कुश्ती महासंघ के सहयोग से यह लीग आईपीएल जैसी फ्रेंचाइज़ी प्रणाली पर आधारित होगी, जिसमें भारत के साथ-साथ विदेशी पहलवान भी मुकाबला करेंगे. लॉन्च के दौरान डब्ल्यूएफआई के प्रवक्ता ने कहा,पीडब्ल्यूएल की वापसी सिर्फ मनोरंजन के लिए नहीं है, बल्कि यह भारत की महिला पहलवानों को दुनिया के मंच पर अपनी पहचान बनाने का मौका देगी.

हमारी महिला क्रिकेट टीम की शानदार सफलता के बाद, अब कुश्ती भारत की खेल क्रांति का अगला अध्याय लिखने के लिए तैयार है. महिलाओं की भागीदारी पर विशेष ध्यान प्रो रेसलिंग लीग 2026 की सबसे खास बात यह है कि यह लीग महिला खिलाड़ियों की भागीदारी और नेतृत्व को बढ़ावा देने पर खास ध्यान देगी. यह पहल महिलाओं को न सिर्फ पहलवानी के अखाड़े में, बल्कि खेल के हर स्तर पर आगे बढ़ने का अवसर देगी. लीग आयोजकों ने यह सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्धता जताई है-

- हर टीम में महिला खिलाड़ियों को बराबर प्रतिनिधित्व मिलेगा.
- महिला मुकाबलों का प्रसारण प्राइम टाइम में किया जाएगा, ताकि उनकी लोकप्रियता और दर्शक संख्या बढ़े.
- उभरती हुई पहलवानों को अनुभवी चैंपियनों से जोड़ा जाएगा, ताकि वे उनसे सीख सकें और आगे बढ़ें.
- महिला खिलाड़ियों को बराबर इनामी राशि और स्पॉन्सरशिप के अवसर दिए जाएंगे.

यह पहल भारत में खेलों में लैंगिक समानता की बढ़ती भावना को मजबूती देती है और देशभर की युवा लड़कियों के लिए कुश्ती को एक प्रेरणादायक करियर विकल्प के रूप में स्थापित करने का लक्ष्य रखती है. पीडब्ल्यूएल के सीईओ अखिल गुप्ता ने कहा, प्रो रेसलिंग लीग की वापसी सिर्फ एक खेल को फिर से शुरू करने की बात नहीं है, यह एक सपने को दोबारा जगाने की कोशिश है. हमारी महिला पहलवानों में वो काबिलियत, हौसला और जुनून है कि वे दुनिया के किसी भी मंच पर डटकर खड़ी हो सकती हैं. बराबर के अवसर और बेहतर पहचान के साथ, हम ऐसा भविष्य बना रहे हैं जहाँ कुश्ती हर लड़की को यह विश्वास दिलाए कि वह भी कर सकती है. यह सिर्फ एक लीग नहीं, बल्कि भारत में ताकत और बहनचारे का आंदोलन है.

क्रिकेट की प्रेरणा, कुश्ती का अवसर भारतीय महिला क्रिकेट टीम की विश्व कप जीत ने प्रशंसकों और प्रायोजकों की नज़र में महिला खिलाड़ियों की छवि को एक नई पहचान दी है. खेल विशेषज्ञों का मानना है कि यह जोश अब महिला कुश्ती तक भी पहुँचेगा, जिससे प्रो रेसलिंग लीग में कॉरपोरेट निवेश, विज्ञापन और दर्शकों की बढ़ती दिलचस्पी के नए अवसर खुलेंगे. पहले से ही भारत के पास साक्षी मलिक, अंतिम पंघाल और विनेश फोगाट जैसी विश्वस्तरीय पहलवान हैं. ऐसे में देश में कुश्ती के लिए एक बड़ा मोड़ साबित हो सकती है — जो इस पारंपरिक ग्रामीण खेल को बदलकर राष्ट्रीय स्तर का प्राइम-टाइम खेल बना देगी. जमीनी स्तर पर सशक्तिकरण और व्यापक दृष्टिकोण पीडब्ल्यूएल के पुनरुद्धार का मकसद सिर्फ खेल को दोबारा लोकप्रिय बनाना नहीं, बल्कि उसका विकासात्मक लक्ष्य भी है.

निशानेबाज

चुरा के वोट मेरा बीजेपी चली राहुल आरोप लगाते गली-गली

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, चोरी की रिपोर्ट थाने में तुरंत लिखवानी चाहिए. एक साल बाद चोरी की शिकायत करने में क्या तुक है? हरियाणा विधानसभा चुनाव में 25,00,000 वोट चोरी का आरोप राहुल गांधी अब लगा रहे हैं. 2024 से अब तक क्या वह सोए हुए थे?' हमने कहा, 'आपने कहावत सुनी होगी-जब जागे तभी सवेरा ! बिहार चुनाव के वक्त बीजेपी और चुनाव आयोग को राहुल ने आड़े हाथ लिया. इसे कहते हैं- मौका देखकर चौका मारना!'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, चुनाव आयोग ने पहले भी कहा है कि राहुल आरोप लगाकर भाग जाते हैं. जब 2024 के चुनाव के पहले ड्राफ्ट मतदाता सूची आ गई थी तभी उन्होंने आपत्ति क्यों नहीं दर्ज कराई? अब इस तरह के आरोप लगाना अनुचित है. उन्हें शपथपत्र पर अपनी बात कहनी चाहिए.' हमने कहा, 'शपथपत्र की लिखा-पढ़ी क्यों? राहुल डंके की चोट पर वोट चोरी की बात कह रहे हैं. वह आरोप चुनाव आयोग पर लगाते हैं लेकिन इससे बीजेपी

के नेता तिलमिला जाते हैं. राहुल को साहित्यिक हिंदी आती तो कह सकते थे चोर-चोर मौसेरे भाई!'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, चोर कौन नहीं है? आईएस जौहर की पुरानी फिल्म का नाम था हम सब चोर हैं. उसका गीत था- इस दुनिया में सब चोर-चोर, कोई छोटा चोर कोई बड़ा चोर तो कोई दिल का चोर। इसी तरह फिल्म यादों की बारात का यह गीत मशहूर है- चुरा लिया है तुमने जो दिल तो, नजर नहीं चुराना सनम, बदलके मेरी तुम जिंदगानी, कहीं बदल ना जाना सनम!'

हमने कहा, 'राहुल गांधी चाहे तो बीजेपी और चुनाव आयोग की तथाकथित मिलीभगत को निशाना बनाते हुए मुकेश का गीत गुनगुना सकते हैं- चोरी-चोरी जो तुमसे मिले तो लोग क्या कहेंगे, अजी इसे प्यार कहेंगे, अजी इसे प्यार कहेंगे!' सुनील शेट्टी ने शिल्पा शेट्टी के लिए गाया था- गोरिया चुरा ना मेरा जिया!'

हमने कहा, 'जहां तक चोरी की बात है वह 64 कलाओं में से एक मानी जाती है. कुछ लोग साहित्यिक चोरी करते हैं और दूसरे की कविता-कहानी अपने नाम से छपवा लेते हैं. फिल्मों में अभिनय शैली की भी चोरी होती है. दिलीपकुमार के स्टाइल की कुछ-कुछ नकल राजेंद्रकुमार, मनोजकुमार और शाहरुख खान ने भी की थी. भगवान श्रीकृष्ण को उनके भक्त माखनचोर कहते हैं. वह गोपियों के चितचोर थे. हम तो कहते हैं कि जिस तरह 'ज्वेल थीफ' नामक फिल्म बनी थी वैसे ही 'वोट थीफ' नाम से मूवी बननी चाहिए.'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12074 - डॉ. सागर खादीवाला

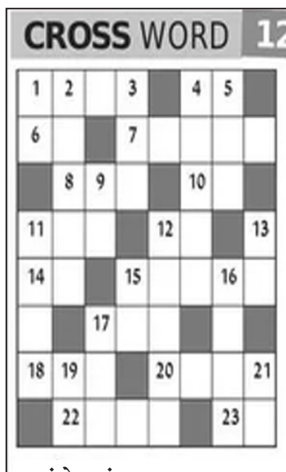

बाएं से दाएं

1. 1. गिलास के आकार का बड़े मुंह का बर्तन जो पूजा में जल रखने के काम आता है, वह श्राद्ध जिसमें पांच पात्रों को रखकर भोग लगाया जाता है (सं.) 4. रक्त, लहू, हत्या (उर्दू) 6. मकड़ी का बुना हुआ जाल 7. जो सदा फूले, जो सदा हरा रहे 8. विश्वास, एतबार (उर्दू) 10. निर्जन, जहां कोई न हो 11. अनोखा काम, निपुणता (उर्दू) 12. निष्कर्ष, सत्त, अर्क (सं.) 14. आटा, पिसान, चूर्ण 15. पत्थर गढ़ने या काटने वाला कारीगर (उर्दू) 17. फासला, भेद, फरक 18. प्राप्तका, किसी वस्तु के प्राप्त होने पर प्रमाण स्वरूप लिखा हुआ पत्र (उर्दू) 20. देर लगाना, झगड़ना, कुढ़ना 22. झंडा, पताका (उर्दू) 23. जल रहित भूमि, मैदान, स्थान

ऊपर से नीचे

1. पांचों उंगलियों सहित हथेली या पैर का अगला भाग (उर्दू) 2. चलता हुआ, चंचल 3. भय, चिंता, व्याकुलता (सं.) 4. सुंदर (उर्दू) 5. स्नान करना 9. लोहे या काठ की मेख, नाक का एक आभूषण 11. कुचली हुई चीज 12. समुद्र में जाने वाला (सं.) 13. सिर (सं.) 15. साधु, महात्मा, ईश्वर भक्त 16. राजा का रथ 17. भीतर 19. जल-जंतु का कड़ा खोल जिसके बटन आदि बनते हैं 21. गर्भाशय तथा गर्भस्थ शिशु की नाभि से जुड़ी रहने वाली नली

Solution 12073

उ	ता	व	ली	■	मो	र	■
वं	■	म	■	मे	ह	मा	न
र	ह	न	स	ह	न	■	श्व
ता	व	■	ज	न	■	पा	र
■	न	वा	ग	त	■	ता	■
स	■	द	■	■	आ	ल	म
वे	त	न	भो	गी	■	गं	दा
रा	ब	■	ला	■	भं	गा	र

ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में व्यर्थ की यात्राओं में धन व्यय होगा, मानसिक उलझन रहेगी, शत्रु पक्ष प्रबल रहेगा, वर्ष के मध्य में व्यक्तिगत संबंधों में सुधार होगा, सामाजिक कार्यों में ख्याति मिलेगी, वर्ष केअन्त में व्यर्थ की भागदौड़ से मन तनावग्रस्त रहेगा, दाम्पत्य जीवन सुखमय रहेगा.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों का शत्रु पक्ष प्रबल रहेगा, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों का यात्राओं में धन व्यय होगा, कर्क राशि के व्यक्तियों को मानसिक उलझन रहेगी, सिंह राशि के व्यक्तियों का व्यक्तित्व सुखमय निखरेगा, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को दाम्पत्य जीवन मधुर रहेगा, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों का स्वाभाव मिलनसार और सामंजस्यपूर्ण रहेगा, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को दाम्पत्य जीवन साधारण और आनन्दमय रहेगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक स्वस्थ्य, सुन्दर, दुबला, पतला, किन्तु लबे कद का होगा, इनकी शिक्षा अच्छी होती है, लेखन अध्ययन कार्य में सफलता मिलेगी, आय के एक से अधिक साधन रहेंगे, नौकरी में सफलता प्राप्त होगी, दायित्वों की पूर्ति होगी, माता पिता का भक्त होगा.

मेष- तरक्की का अवसर है, जिसे आप चाहते हैं, उससे मन की बात कह दें, नौकरी में सफलता प्राप्त होगी, शुभ समाचार मिलने का योग है.

वृषभ- अनुभवी लोगों का साथ सुखद रहेगा, कार्यों को इच्छित सफलता प्राप्त होगी, सामाजिक सम्मान प्राप्त होगा, राजकीय सहयोग से शत्रु बाधा दूर होगी.

मिथुन- घरेलू कार्य पूरा करने में व्यस्त रहेंगे, कार्यस्थल पर माहौल अनुकूल रहेगा, भौतिक सुख साधनों की प्राप्ति होगी, सामाजिक कार्यों में रूचि रहेगी.

कर्क- बातचीत में सावधानी रखें, धैर्य से काम लें, अनावश्यक खर्च से चिन्ता होगी, किसी उत्सव में शामिल होने का योग है, मनोरंजन के कार्यों में सफलता मिलेगी.

सिंह- जीवनसाथी की भावनाओं पर ध्यान दें, पुराना विवाद पक्ष में सुलझेगा,पारिवारिक समस्याओं का सरलता से समाधान होगा, नियमितता का ध्यान रखकर कार्य करें.

कन्या- योजना लागू करने का सही समय है, नये संपर्कों से लाभ होगा, आकस्मिक धन लाभ का योग है, पारिवारिक कार्यों में सफलता मिलेगी.

तुला- जीवनसाथी की मदद से मुश्किल राह आसान होगी, बुजुर्गों का ध्यान रखें, सुख ऐश्वर्य आदि की प्राप्ति हो सकती है, प्रवास का योग है.

वृश्चिक- सामाजिक जीवन में बड़ी जिम्मेदारी मिलेगी, प्रियजन की मुलाकात सुखद रहेगी, शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति होगी, जमिथुन जायजाद का सुख मिलेगा.

धनु- आफिस के कार्यों की अधिकता रह सकती है, आवेश में फैसला गलत होगा, विरोधी पक्ष के कारण थोड़ी परेशानी हो सकती है.

मकर- मित्रों के साथ समय मौजमस्ती में बीतेगा, माता पिता से सहयोग मिलेगा, पारिवारिक जीवन सुखद एवं आनन्ददायक रहेगा, लाभ का योग है.

कुम्भ- भावनात्मक संबंधों में मधुरता बढ़ेगी, प्रियजन की मदद से कार्य पूरे होंगे, लंबित कार्यों को पूरा करना ही हितकर रहेगा, अनावश्यक व्ययभार न बढ़ायें.

मीन- मधुरवाणी से सबका दिल जीत लेंगे, प्रापर्टी का विवाद हल होगा,धार्मिक कार्यों में यश-मान सम्मान मिलेगा, मित्रता उपयोगी रहेगी.

उदयकालीन ग्रह चाल

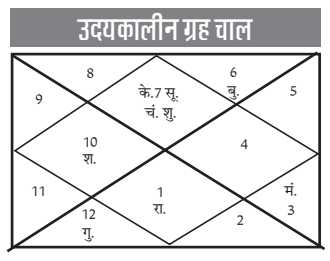

पंचांग

रा.मि. 17 संवत् 2082 मार्गशीर्ष कृष्ण तृतीया शनिवासरे दिन 12/12, मृगशिरा नक्षत्रे रात 3/50, शिव योगे रात 12/35, विष्टि करणे सू.उ. 6/32, सू.अ. 5/28, चन्द्रचार वृषभ शाम 4/36 से मिथुन, पर्व- सौभाग्य सुंदरी व्रत, संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत, शु.रा. 2,4,5,8,9,12 अ.रा. 3,6,7,10,11,1 शुभांक- 4,6,0.

व्यापार भविष्य

मार्गशीर्ष कृष्ण तृतीया को मृगशिरा नक्षत्र के प्रभाव से रूई, कपास, सूत, वस्त्र, नारियल, सुपारी, मेवा, सोना, चांदी, लोहा, तांबा, व शेयर के भाव में मंदी होगी. भाग्यांक 2499 है.

SUDOKU 7206

5	9			3			8	7
8	7		1		5			
		2			9			4
	6				2		3	5
3	8		4	1	7		2	9
2	4		6				1	
7			3			8		
			5		8		7	3
9	3			2			6	1

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सु-डोकू 7205

7	4	8	3	9	2	1	5	6
2	6	9	5	7	1	8	4	3
3	1	5	4	8	6	7	2	9
5	7	4	8	6	9	3	1	2
8	9	1	2	3	4	6	7	5
6	3	2	1	5	7	4	9	8
4	8	7	6	2	5	9	3	1
9	2	6	7	1	3	5	8	4
1	5	3	9	4	8	2	6	7